“चिलगोजा शंकुओं (Cones) का वैज्ञानिक विधि द्वारा तुड़ान” पर एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन

हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला द्वारा दिनांक 13 सितम्बर 2017 को ग्राम पंचायत रारंग, जिला किन्नौर में चिलगोजा प्रजाति के सरंक्षण के लिए राष्ट्रीय कृषि और ग्रामीण विकास बैंक द्वारा वित्त पोषित परियोजना “मूरंग वन परिक्षेत्र, जिला किन्नौर, हिमाचल प्रदेश में वैज्ञानिक हस्तक्षेप के माध्यम से चिलगोजा के संरक्षण के लिए जागरूकता” के तहत **“चिलगोजा शंकुओं (Cones) का वैज्ञानिक विधि द्वारा तुड़ान”** पर एक दिवसीय जागरूकता प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें ग्राम पंचायत रारंग के लगभग 40 किसानों तथा बागवानों ने भाग लिया ।

डॉ. स्वर्ण लता, वैज्ञानिक, हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला ने मुख्य अतिथि श्री किशन सिंह, मुख्य महाप्रबंधक, हिमाचल प्रदेश, श्री कुलदीप चंद, सहायक महाप्रबंधक, हिमाचल प्रदेश, श्री पारस राम, जिला विकास प्रबंधक, किन्नौर (राष्ट्रीय कृषि और ग्रामीण विकास बैंक), श्रीमति रेखा नेगी, प्रधान ग्राम पंचायत, रारंग, वक्ताओं तथा किसानों एवं बागवानों का अभिनन्दन एवं स्वागत किया । अपने स्वागत संबोधन में वैज्ञानिक डॉ. स्वर्ण लता ने कहा कि चिलगोजा जिला किन्नौर का पारिस्थितिकी, सामाजिक एवं आर्थिक रूप से एक महत्वपूर्ण वृक्ष है । यह अपनी स्वादिष्ट गिरी के लिए प्रसिद्ध है तथा विश्व में यह बहुत ही कम स्थानों में पाया जाता है । यह किन्नौर के लोगों

की आय का मुख्य स्त्रोत होने के साथ साथ उनके आहार एवं रीति -रिवाजों का भी अभिन्न् अंग है । हिमाचल प्रदेश में यह प्रजाति किन्नौर (2040 हेक्टेयर) तथा चम्बा (20 हेक्टेयर) जिले में पायी जाती है, परन्तु चिलगोजा शंकुओं को एकत्रित करने के लिए की जाने वाली शाखाओं की अवैज्ञानिक तरीके से कटाई आज के समय में किन्नौर वन क्षेत्र की बहुत बड़ी समस्या बनी हुई है । इन वृक्षों से चिलगोजा शंकुओं को एकत्रित करने के लिए शाखाओं की अनियंत्रित कटाई से उत्पन्न समस्या से अधिकतर लोग परिचित नहीं हैं जिससे न केवल इसका पुनर्जनन कम हो रहा है अपितु शंकुओं के उत्पादन पर भी विपरीत प्रभाव पड़ रहा है । यदि यह स्थिति यथावत बनी रही तो वह दिन दूर नहीं जब यह वृक्ष इस क्षेत्र से लुप्त हो जायेंगें और लोग इससे होने वाले लाभ से हमेशा के लिए वंचित हो जाएँगे । उन्होंने यह भी बताया की वन कानून के तहत प्राकृतिक वन सरकारी संपत्ति होते हैं परन्तु किन्नौर के लोगों को चिलगोजा बीज एकत्रित करने के अधिकार हैं इसलिए इस तरह की विनाशकारी कटाई से होने वाले नुकसान से बचने के लिए न केवल वैज्ञानिक हस्तक्षेप अपितु लोगों के हस्तक्षेप की भी अत्यधिक आवश्यकता है ताकि इस क्षेत्र में चिलगोजा वृक्षों को हो रही क्षति से बचाया जा सके । इससे न केवल आने वाली भावी पीढ़ियों को इस बहुमूल्य वन सम्पदा का लाभ पहुंचेगा अपितु अन्य पर्यावरणीय सेवाएं भी प्राप्त होती रहेंगी ।

श्री पारस राम, जिला विकास प्रबंधक (राष्ट्रीय कृषि और ग्रामीण विकास बैंक), किन्नौर ने अपने संबोधन में कहा चिलगोजा किन्नौर क्षेत्र में पाया जाने वाला एक बहुत ही महत्वपूर्ण पौधा है तथा इसका यहाँ के निवासियों की आर्थिकी एवं पर्यावरण संतुलन में इसका महत्वपूर्ण योगदान है पर चिलगोजा के शंकुओं को एकत्रित करने के दौरान शाखाओं की अंधाधुंध कटाई बहुत बड़ी समस्या बनी हुई है तथा इस समस्या से निपटने के लिए लोगों को ही आगे आना होगा । उन्होंने आशा व्यक्त की कि इस प्रशिक्षण से जिला किन्नौर के किसान एवं बागवान ज़रूर लाभान्वित होंगे ।

श्री कुलदीप चंद, सहायक महाप्रबंधक (राष्ट्रीय कृषि और ग्रामीण विकास बैंक) ने कहा कि चिलगोजा की पैदावार और पुनर्जनन को बढ़ाने के लिए चिलगोजा शंकुओं को एकत्रित करने के दौरान शाखाओं की अत्यधिक कटाई से चिलगोजा के वृक्षों को हो रही क्षति को रोकना होगा क्योंकि इस क्षेत्र के लोग आर्थिक रूप से चिलगोजा वृक्षों पर अत्यधिक निर्भर हैं ।

इस अवसर पर अपने विचार प्रकट करते हुए श्रीमती रेखा नेगी, पंचायत प्रधान, रारंग ने संस्थान के प्रयास की सराहना की तथा आशा व्यक्त की कि चिलगोजा के जंगलों के सरंक्षण के लिए आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम से उनके गांव के किसान एवं बागवान ज़रूर जागरूक एवं लाभान्वित होंगे । उन्होंने भविष्य में भी इस तरह के कार्यक्रमों के आयोजन का आग्रह किया ।

मुख्य अतिथि श्री किशन सिंह, मुख्य महाप्रबंधक, राष्ट्रीय कृषि और ग्रामीण विकास बैंक, हिमाचल प्रदेश ने इस प्रशिक्षण कार्यक्रम का शुभारम्भ कर अपने विचार प्रकट करते हुए कहा कि बैंक अपनी ओर से अपनी योजनाओं के माध्यम से किसानों तथा बागवानों की सहायता करने के लिए तत्पर रहता है और कहीं न कहीं ग्रामीण विकास में अपना महत्वपूर्ण योगदान दे रहा है । इस कड़ी में बैंक द्वारा वित्त पोषित परियोजना "चिलगोजा" के अंतर्गत आज इस महत्वपूर्ण विषय पर प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है तथा भविष्य में भी बैंक इस तरह के प्रयास करता रहेगा । उन्होंने हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान शिमला की इस पहल कि सराहना की और यह भी कहा कि भविष्य में भी बैंक इस तरह के प्रयास करता रहेगा । उन्होंने आशा व्यक्त की कि इस प्रशिक्षण से जिला किन्नौर के किसान तथा बागवान लाभान्वित होंगे तथा वैज्ञानिक विधि से चिलगोजा शंकुओं का दोहन करेंगे जिससे यह पौधा तथा इसके जंगल भविष्य में भी विद्यमान रहेंगे । उन्होंने लोगों को यह भी आश्वस्त किया कि चिलगोजा के बीजों के व्यापार का सीधा लाभ किसानों एवं बागवानों को मिले इसके लिए भी वे जल्द ही कुछ कार्य करेंगे ।

तकनीकी सत्र के दौरान चिलगोजा संरक्षण से संबंधित विभिन्न विषयों पर किसानों एवं बागवानों को विस्तार से जानकारी दी गई । डॉ. स्वर्ण लता, वैज्ञानिक, हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला ने किसानों एवं बागवानों को 'चिलगोजा संरक्षण में चिलगोजा शंकुओं के सतत् तुड़ान की आवश्यकता' से अवगत करवाया तथा चिलगोजा शंकुओं को

एकत्रित करने के लिए की जाने वाली शाखाओं की असंवहनीय तरीके से कटाई से होने वाले नुकसान को रोकने के लिए उचित उपकरण (मल्टी एंगुलर लॉन्ग रीच प्रुनर) के प्रयोग की आवश्यकता पर बल दिया । डॉ. पवन राणा, वैज्ञानिक, हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला ने किसानों एवं बागवानों को 'कीटों और रोगाणुओं से चिलगोजा का बचाव' विषय

पर जानकारी देते हुए कहा कि कीटों की बहुत सारी प्रजातियां चिलगोजा को नुकसान पहुचती हैं तथा इनके नुकसान से चिलगोजा को बचने के लिए इनके संक्रमित छाल, शाखाओं एवं शंकुओं को काट कर जला देना चाहिए ताकि यह इन्हें और नुकसान न पहुंचा पायें । चिलगोजा के बीजों को सूक्ष्म जीवों एवं कीटों से बचाने के लिए प्रघात, नीम पाउडर, फरसा और रोबस्ट का इस्तेमाल करना चाहिए ।

अध्यक्ष महिला कल्याण परिषद, कुमारी रतन मंजरी नेगी ने 'चिलगोजा वन संरक्षण में सामुदायिक योगदान के महत्व' के बारे में लोगों को बताया । उन्होंने यह भी कहा कि यह किन्नौर में रहने वाले हर एक नागरिक की जिम्मेदारी है कि वे चिलगोजा जैसे अनमोल प्राकृतिक संसाधन की रक्षा के लिए स्वेच्छा से आगे आकर अपनी भागीदारी सुनिश्चित करें ।

श्री, रोशन लाल नेगी, वन खंड अधिकारी एवं संदीप कुमार, वन रक्षक, मूरंग वन परिक्षेत्र ने 'चिलगोजा वन क्षेत्र की समस्याओं तथा उनके समाधान' के बारे में लोगों को जागरूक किया । इसी दौरान लोगों ने चिलगोजा से सम्बंधित अपनी समस्याएं वन अधिकारियों के समक्ष रखीं एवं वन अधिकारियों ने भी उन्हें पूर्ण सहयोग का आशवासन दिया ।

श्री श्याम सुंदर, तकनीशियन, हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला ने 'मल्टी एंगुलर लॉन्ग रीच प्रुनर' के संचालन तथा इसकी सहायता से चिलगोजा शंकुओं को कैसे तोड़ा जाये के बारे में लोगों को चिलगोजा वन क्षेत्र में ले जाकर क्षेत्र प्रदर्शन किया । इसी दौरान पांच मल्टी एंगुलर लॉन्ग रीच प्रुनर भी पंचायत प्रधान को मुख्य अतिथि द्वारा प्रदान किये गए ।

अंत में डॉ. स्वर्ण लता, वैज्ञानिक, हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला ने इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में उपस्थित मुख्य अतिथि श्री किशन सिंह, मुख्य महाप्रबंधक, हिमाचल प्रदेश, श्री कुलदीप चंद, सहायक महाप्रबंधक, हिमाचल प्रदेश, श्री पारस राम, जिला विकास प्रबंधक, किन्नौर (राष्ट्रीय कृषि और ग्रामीण विकास बैंक), श्रीमति रेखा नेगी, प्रधान ग्राम पंचायत, रारंग, वक्ताओं तथा किसानों एवं बागवानों का धन्यवाद एवं आभार व्यक्त किया। उन्होंने चिलगोजा परियोजना में प्रस्तावित जागरूकता प्रशिक्षण कार्यक्रम के आयोजन हेतु सभी आवश्यक सुविधायें प्रदान करने के लिए निदेशक, हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला एवं वित्तीय सहायता के लिए राष्ट्रीय कृषि और ग्रामीण विकास बैंक (नाबार्ड), शिमला, हिमाचल प्रदेश का भी धन्यवाद किया।

NABARD
एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम
दिनांक: 13 सितम्बर 2017
स्थान: ग्राम पंचायत रारंग, जिला किन्नौर, हिमाचल प्रदेश

मीडिया कवरेज

किन्नौर में चिलगोजा संरक्षण पर एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन

शिमला/एक्शन इंडिया ब्यूरो

हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला द्वारा दिनांक 13 सितम्बर 2017 को वन पंचायत रारंग, जिला किन्नौर में चिलगोजा प्रजाति के संरक्षण के लिए राष्ट्रीय कृषि और ग्रामीण विकास बैंक द्वारा वित्त पोषित परियोजना नूरंग वन परिक्षेत्र जिला किन्नौर, हिमाचल प्रदेश में वैज्ञानिक हस्तक्षेप के माध्यम से चिलगोजा के संरक्षण के लिए जागरूकता के साथ चिलगोजा शंकुओं का वैज्ञानिक विधि द्वारा तुड़ान पर एक जागरूकता प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें ग्राम पंचायत रारंग के लगभग 40 किसानों तथा बागवानों ने भाग लिया। इस अवसर पर डॉ. स्वर्ण लता, वैज्ञानिक हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला ने मुख्य अतिथि किशन सिंह, मुख्य महाप्रबंधक (राष्ट्रीय कृषि और ग्रामीण विकास बैंक) पारस राम, जिला विकास प्रबंधक (राष्ट्रीय कृषि और ग्रामीण विकास बैंक) कुलदीप चंद सहायक महाप्रबंधक, डॉ. पवन राणा, वैज्ञानिक रेखा नेगी, प्रधान, ग्राम पंचायत, रिस्पा, बैंकों तथा प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग ले रहे किसानों एवं बागवानों का अभिनन्दन एवं स्वागत अभिनंदन किया।

डॉ. स्वर्ण लता ने कहा कि चिलगोजा जिला किन्नौर का पारिस्थितिकी, सामाजिक एवं आर्थिक रूप से एक महत्वपूर्ण वृक्ष है। यह किन्नौर के लोगों की आय का मुख्य स्रोत होने के साथ साथ उनके आहार एवं रीति रीतियों का भी अभिन्न अंग है परन्तु चिलगोजा शंकुओं को एकत्रित करने के लिए की जाने वाली शाखाओं की अवैज्ञानिक तरीके से कटाई आज किन्नौर वन क्षेत्र की बहुत बड़ी समस्या बनी हुई है। इन वृक्षों से चिलगोजा शंकुओं को एकत्रित करने के लिए शिला किन्नौर का पारिस्थितिकी, सामाजिक एवं आर्थिक रूप से एक महत्वपूर्ण वृक्ष है। यह किन्नौर के लोगों की आय का मुख्य स्रोत होने के साथ साथ उनके आहार एवं रीति रीतियों का भी अभिन्न अंग है परन्तु चिलगोजा शंकुओं को एकत्रित करने के लिए की जाने वाली शाखाओं की अवैज्ञानिक तरीके से कटाई आज किन्नौर वन क्षेत्र की बहुत बड़ी समस्या बनी हुई है। इन वृक्षों से चिलगोजा शंकुओं को एकत्रित करने के लिए शाखाओं की अनियंत्रित कटाई से न केवल इसका पुनर्जनन कम हो रहा है अपितु शंकुओं के उत्पादन पर भी विपरीत प्रभाव पड़ रहा है। अनियंत्रित कटाई से उत्पन्न समस्या के दूरगामी परिणामों से अधिकतर लोग परिचित नहीं हैं और यदि यह स्थिति सम्भवतः बनी रही तो वह दिन दूर नहीं जब यह वृक्ष इस क्षेत्र से लुप्त होने के कगार पर आ जाएगा और लोग इससे होने वाले लाभ से वंचित हो जाएंगे। इस ज्वलंत समस्या के दृष्टिगत हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान ने चिलगोजा के संरक्षण के लिए इस जागरूकता प्रशिक्षण कार्यक्रम के माध्यम से लोगों को जागरूक करने की पहल की है।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि किशन सिंह, मुख्य महाप्रबंधक (राष्ट्रीय कृषि और ग्रामीण विकास बैंक) ने अपने विचार प्रकट करते हुए कहा कि चिलगोजा किन्नौर क्षेत्र में पाया जाने वाला बहुत ही महत्वपूर्ण वृक्ष है तथा इसका किन्नौर क्षेत्र के निवासियों की आर्थिकी में महत्वपूर्ण योगदान है। उन्होंने कहा कि बैंक अपनी ओर से अपनी योजनाओं के माध्यम से किसानों तथा बागवानों की सहायता करने के लिए तत्पर रहता है एवं ग्रामीण विकास में अपना महत्वपूर्ण योगदान दे रहा है। उन्होंने आशा व्यक्त की कि इस प्रशिक्षण कार्यक्रम से जिला किन्नौर के किसान तथा बागवान निश्चित ही लाभान्वित होंगे तथा वैज्ञानिक विधि से चिलगोजा प्रजाति का दोहन करेंगे जिससे वह पीढ़ी तथा इसके जंगल भविष्य में भी विद्यमान रहेंगे। उन्होंने हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला के इस पहल कि सराहना की और कहा कि भविष्य में भी बैंक इस तरह के प्रयास में अपना योगदान करता रहेगा। इस अवसर पर अपने विचार प्रकट करते हुए पंचायत प्रधान, रारंग रेखा नेगी ने कहा कि चिलगोजा के जंगलों के संरक्षण के लिए जो पहल हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान ने की है उससे ग्राम पंचायत रारंग के किसान व बागवान निश्चित ही लाभान्वित होंगे। उन्होंने संस्थान से भविष्य में भी इस तरह के कार्यक्रमों का आयोजन करते रहने का आग्रह किया।

एक्शन इंडिया Fri, 15 September 2017 action india epaper.in//c/22457490

प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन

रिकांगपिओ, 16 सितम्बर (रिपन) : हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान शिमला द्वारा जिला किन्नौर के रारंग व जंगी में चिलगोजा प्रजाति के संरक्षण के लिए एकदिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें ग्राम पंचायत रारंग व जंगी के लगभग 80 किसानों तथा बागवानों ने भाग लिया। इस अवसर पर डा. स्वर्णलता वैज्ञानिक हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान शिमला ने मुख्यातिथि किशन सिंह मुख्य महाप्रबंधक राष्ट्रीय कृषि और ग्रामीण विकास बैंक, पारस राम जिला विकास प्रबंधक राष्ट्रीय कृषि और ग्रामीण विकास बैंक, कुलदीप चंद सहायक महाप्रबंधक, डा. पवन राणा वैज्ञानिक, रेखा नेगी प्रधान ग्राम पंचायत रिस्पा तथा प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग ले रहे किसानों एवं बागवानों का अभिनन्दन किया।

पंजाब केसरी ई-पेपर Sun, 17 September 2017 epaper.punjabkesari.in//c/224907